हिन्दी और बांग्ला के सेतु

❑ श्रीपर्णा तरफदार

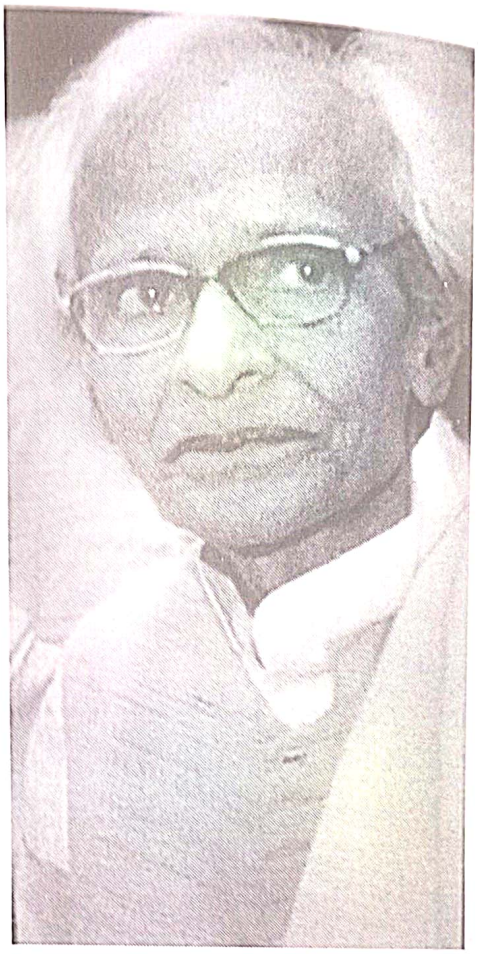

श्रद्धेय कृष्णबिहारी मिश्र सच्चे अर्थों में भारतीय लेखक थे जिनका रुख ग्रामोन्मुखी जनवाद की ओर था। उनकी शुरुआत कहानी से हुई लेकिन फिर उन्होंने अपनी दिशा बदल ली और निबंध-लेखन की ओर प्रवृत्त हुए। लेकिन उन्होंने स्वयं को निबंध-लेखन तक ही सीमित नहीं किया। पत्रकारिता, निनिबंध, संस्मरण, जीवन-प्रसंग, साहित्येतिहास, आदि क्षेत्रों में भी उनके योगदान को बखूबी देखा जा सकता है। वास्तव में वे बहुधर्मी लेखक थे। अपनी रचनाधर्मिता के माध्यम से लोक चेतना को तेजोद्दीप्त करने वाली, उसमें संघर्षजीविता और आत्मबल पैदा करने वाली हर जीवनानुभूति के पक्ष में वे खड़े होते हैं। उनका लेखन मनुष्यत्व, परंपरा और संस्कृति की सारी हदों को छूता है। उन्होंने हमेशा एक उदार और महनीय लोकतांत्रिक समाज की संरचना का ही स्वप्न देखा ।

कृष्णबिहारी जी एक ऐसे व्यक्तित्व थे जो अपनी आत्मीयता और स्नेहपाश में सबको सहज ही बाँध लेते थे। विनम्रता उनके स्वभाव में थी। श्री रामकृष्ण परमहंस देव ने कहा है - 'विनम्रता महानता की निशानी है'। सचमुच मिश्र जी एक महान व्यक्तित्व थे। उनके हृदय में हर किसी के प्रति अपार स्नेह और करुणा थी। वे परंपरानिष्ठ थे लेकिन अपने समय की गतियों को खूब समझते थे। उनका रचना-संसार परंपरा और समाज की उन मूलभूत अवधारणाओं और उनसे विकसित सोच-पद्धति का अनुगमन करती है जिसमें जीवन-मूल्यों की चिंता हमेशा की गई है। वे भारतीय समाज को पश्चिम की सांस्कृतिक और सामाजिक प्रतिच्छवि में ढालने के कायल नहीं थे। उनमें किसी प्रकार का कोई वैचारिक दुराग्रह नहीं था। कहना न होगा कि उनमें बौद्धिक खुलापन और स्वाधीनता-बोध था जो एक लोकतांत्रिक देश में अपना विशिष्ट महत्व रखता है। उनका समस्त रचना-कर्म इसी का दस्तावेजी प्रमाण है।

उन्होंने अपने रचना-संसार में स्वतंत्र रूप से जो रेखांकित किया, वह बहुमूल्य और विचारणीय है। उनके रचना-संसार से गुजरते हुए यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि वे हिन्दी और बांग्ला दो भिन्न संस्कृतियों को एक-दूसरे

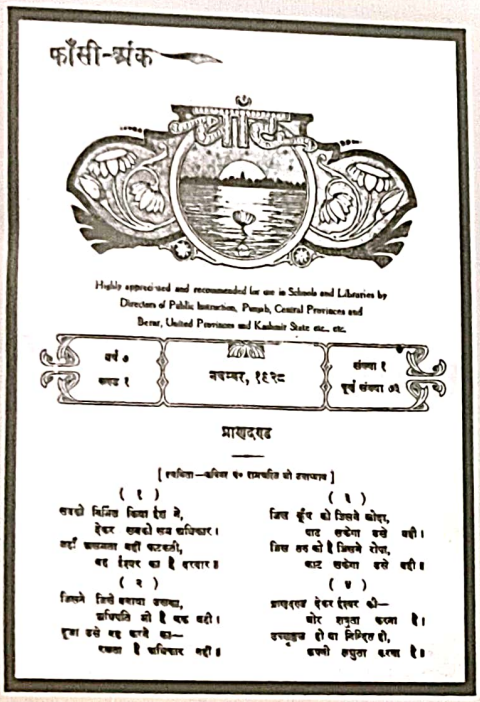

डाक पंजीयन क्र. म.प्र. भोपाल / 162 / 2021–23
पोस्टिंग दिनाँक : 15 अप्रैल 2023, कुल पृष्ठ 44
प्रकाशन दिनाँक : 15 अप्रैल 2023

आर.एन.आई.पं.क्र. MP HIN/2004/12178
ISSN 2319-3107
मूल्य ₹ 25/-

आंचलिक पत्रकार

492

सितंबर, 1981 से प्रकाशित

प्रकाशनारंभ की शत-वार्षिकी

'चाँद' 'माधुरी'

सप्रे संग्रहालय

सा विद्या या विमुक्तये

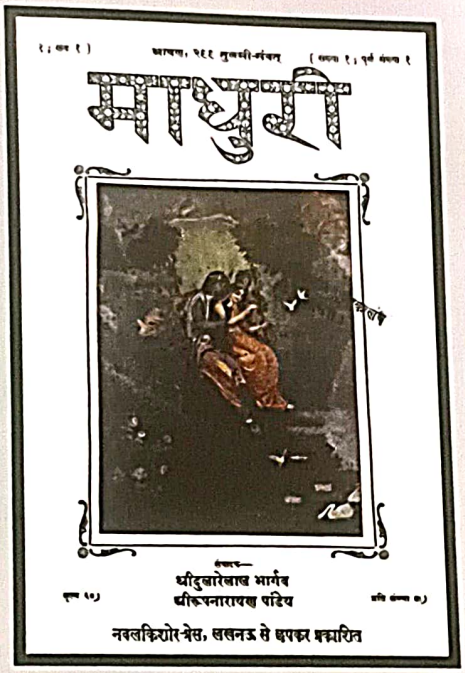

पत्रकारिता, जनसंचार और विज्ञान संचार की शोध पत्रिका

https://www.anchalikpatrakar.com